खुद को बदलूंगी तभी तो दूसरों को बदल पाऊंगी।

lEik

मेरा नाम सम्पा है, मैं जे.जे. कॉलोनी, बवाना में रहती हूं। मैं जागोरी में फ़ैलोशिप के माध्यम से जुड़ी थी। तब मुझे पूरी तरह नहीं पता था कि जागोरी संस्था क्या करती है, पर मेरी छोटी बहन जागोरी के साथी समूह में जुड़ी हुई थी, और मुझे जागोरी की मीटिंगों में होने वाली बातचीत, चर्चाओं के बारे में बताती रहती थी, जैसे हिंसा, जेंडर भेदभाव आदि। उसकी बातें सुनकर मुझे भी इस संस्था से जुड़ने का मन होता था, लेकिन घर और काम की ज़िम्मेदारियों में उलझी रही, पर अपनी बहन को बराबर इन मीटिंगों के लिए भेजती रहती थी, क्योंकि पलटकर मुझे भी तो पता चल ही जाता था न!

फ़ैलो के रूप में जागोरी से जुड़ने के बाद मुझे पता चला कि यह संस्था क्या–क्या काम करती है, जैसे महिलाओं के प्रति हो रही हिंसाओं के खिलाफ़ लोगों को जागरूक करना, उन्हें कायदे कानून और अधिकारों के बारे में जानकारी देना और जनसुविधाओं से जुड़ी समस्याओं पर लोगों को एकजुट करना। यहां पर किशोर एवं किशोरियों का युवा समूह बना है जो मंथली मीटिंग, गली मीटिंग, नुक्कड़ नाटक, पी.डी.एस. कैंपों, रेडियो कार्यक्रमों, उमड़ते सौ करोड़ अभियान, विभिन्न प्रशिक्षणों में जुड़ते हैं। इनके माध्यम से वे खुद अपनी भागीदारी के माध्यम से जानकारी लेते हैं और समुदाय में अपने अनुभव और जानकारियां बांटते हैं और सामुदायिक निगरानी में जुड़ते हैं।

जैसे–जैसे मैं यहां अपनी फ़ैलोशिपका काम करती रही, मुझे पता चला कि यहां पर हम उस शख्स की भी बात करते हैं जो समाज में औरतों से भी नीचे हैं, जिन्हें समाज हिजड़ा कहता है, छक्का कहते हैं। यहां पर मैंने समझा कि समाज में पुरुषों ने अपना आधिपत्य बनाए रखने के लिए क्या–क्या नियम बना रखे हैं, जिसमें पुरुष सबसे ऊपर है, फिर औरत और फिर ट्रांसजेंडर। पुरुष समाज में अपना आधिपत्य बनाए रखने के लिए पितृसत्ता या जेंडर भेदभाव का इस्तेमाल करता है जिसमें वह अपने आप को हर चीज़ का अधिकारी समझता है।

यहां पर मैंने साथी समूह के साथ कई सारी फ़िल्में देखीं, जैसे फुटबॉल–शुटबॉल हाय रब्बा, इंगलिश–विंगलिश, तीसरा रास्ता, घरेलू हिंसा, जोर से बोल, डर्टी पिक्चर, मिर्च, बोल और भी कई तरह की फिल्में, इन्हें देखकर और उन पर होने वाली चर्चाओं से मैंने सीखा कि औरतों व लड़कियों को हर कदम पर हिम्मत के साथ एवं अपने हित के लिए चलना चाहिए, अपने विचारों को महत्व देना चाहिए, अपने लिए जीना चाहिए।

मैंने जागोरी में जुड़ने के बाद कई प्रशिक्षण भी लिए, जिनमें जेंडर बेसिक कोर्स भी शामिल जिसमें मैंने जाना कि यौनिकता क्या है, महिलाओं को ही क्यों परदा करने को कहा जाता है, जेंडर भेदभाव से किस वर्ग को फायदा है, पितृसत्ता एवं महिलाओं के हित के लिए बनाए गए कानूनों के विषय में जाना, दलित वर्ग के लोगों के साथ कितना अत्याचार हुआ है और होता है, इस बारे में भी जानकारियां बढ़ीं। मैंने यहां पर लेसबियन, गे, ट्रांसजेंडर, ट्रांस स्टार आदि के विषय में जाना। मैं इन मीटिंगों में जुड़ कर यह समझ पाई कि नारीवाद क्या है और ये नारीवादी बराबरी की बातें करते हैं न कि किसी का घर तोड़ने की।

मुझे इन सब विषयों पर जानकारी मिलने से ऐसा लगा कि ये जानकारी शायद ही कभी मुझ तक पहुंच सकती थी, किसी स्कूल या किताब में तो यह सब हमें पढ़ाया नहीं गया था पर ज़िंदगी की यह कड़वा सच हम यहीं आकर समझ पाए कि हमारे साथ जो भेदभाव, हिंसा होती है वह गलत है और उसे बर्दाश्त करके वास्तव में हम सही नहीं कर रहे। अगर समाज बदलना है

तो हर तरह की हिंसा के खिलाफ़ आवाज़ उठानी होगी। इसीलिए मुझे जो भी जानकारी प्राप्त होती है उसे मैं मौका मिलते ही समुदाय के लोगों में ज़रूर बांटती हूं, तभी तो बदलाव आएगा। जागोरी में मैंने फ़ील्ड में जाकर लोगों से बात करना, उनसे जुड़ाव बनाना, मित्रता बनाए रखना, सीखा और यह जाना कि ऑफ़िस में, संस्था में किस तरह काम करते हैं, रिपोर्ट बनाना यानि दस्तावेजीकरण सीखा, योजनाओं की जानकारी लेना, कैमरा चलाना, पीडी.एस. फ़ॉर्म भरना, नुक्कड़ नाटकों में हिस्सा लेकर सामाजिक समस्याओं पर आवाज़ उठाना सीखा। अब मैं लोगों के साथ सहजता से पेश आना सीख गई हूं। मुझे सुरक्षा ऑडिट के बारे में पता चला, और हम जान पाए कि किसी भी समस्या के कारणों पर किस तरह से रोशनी डालकर उसे प्रभावी तरीके से पेश किया जा सकता है, हमने गली मीटिंग करना, किशोरियों के साथ चर्चा करना, गेम खेलना, न्यूज़ पेपर से महत्वपूर्ण जानकारियां इकट्ठा करना और लोगों तक पहुंचाना हमने सीखा है, जिसका हमारे अपने और सामुदायिक जीवन पर गहरा असर हुआ है। अब मुझे लगता है कि हमारे हित को लेकर हमारे पास ही जानकारी ही नहीं है, बल्कि यह जानकारी समाज में हमारी पहचान बनाने और हमें सशक्त करने का काम भी करती है।

ऐसा नहीं है कि जागोरी के साथ मेरा यह सफ़र बहुत आसान रहा। इस दौरान मुझे बहुत सी कठिनाइयों से भी गुजरना पड़ा क्योंकि मैं पहले घर से बाहर भी नहीं निकलती थी; फ़ील्ड पर काम करने का मतलब है कि फ़ील्ड में काम करते हुए हर तरह के लोग मिल सकते हैं। पहले मुझे लड़कों को देखकर वहां से जाने में डर लगता था, लोगों से बात करने में हिचकिचाहट होती थी। फ़ील्ड में अकेले आने जाने में डर लगता था। इसके अलावा गली मीटिंग करना, चर्चा करना यह सब मेरे लिए किसी चुनौती से कम नहीं था, पर यह काम अब मेरे लिए कोई चुनौती नहीं रह गया है। अब अगर फ़ील्ड में कोई व्यक्ति किसी समस्या के बारे में पूछ लेता है तो मुझे पता होता है तो बता देती हूं वरना दीदी या भईया से पूछकर उनका समाधान बता देती हूं।

अपने घर में भी बराबरी का हक़ पाना मेरे इस सफ़र की सबसे बड़ी चुनौती थी, जिसके लिए मुझे मेरे भाई से लड़ना पड़ा। मम्मी, दीदी–जीजाजी सभी को लड़का–लड़की की बराबरी के बारे में समझाना पड़ा, आज भी उनसे ऐसी बातों पर अनबन हो जाती है, पर जहां तक मम्मी और भाई का सवाल है उन पर कुछ तो असर हुआ है। अब भाई साथ में कुछ–कुछ काम करा लेता है। भाई को भी जागोरी के शक्ति समूह में जुड़वा दिया ताकि उसकी भी जानकारी बढ़े। मेरी हमेशा यही कोशिश होगी कि मुझे यहां से जो भी जानकारी प्राप्त होती है उसे दूसरों तक भी पहुंचाती रहूं और जहां तक बराबरी और बदलाव की बात है वो तो अपने जीवन में बरकरार रखूंगी, अपनी एक अलग पहचान बनाऊंगी।